आठ मार्च : हमारा दिन-हमारा त्यौहार

कमला भसीन

हर साल आठ मार्च के आसपास देश ही नहीं, दुनिया के हर कोने में औरतें अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने की तैयारियां करने लगती हैं। जैसे एक मई दुनिया के मज़दूरों का दिन है, मज़दूरों की एकता, उनके संघर्षों, उनके योगदान का दिन है, उसी तरह आठ मार्च दुनिया की औरतों का दिन है, औरतों के संघर्षों को याद दिलाने वाला दिन है। इस दिन हम गुनगुनाने और गाने लगते हैं–

अपना दिन हम मनायें तो बड़ा मज़ा आए
इसे त्यौहार बनायें तो बड़ा मज़ा आए
सखियां मिल जुल गायें तो बड़ा मज़ा आए
मौज मस्ती मनायें तो बड़ा मज़ा आए।

आठ मार्च को अपना त्यौहार मनायें, इस दिन खुशी मनायें, इस एक दिन कम से कम चूल्हा चौका भुलायें, अपने पंख फैलाने की कसमें खायें, ऊंचे उड़ पाने की कसमें खायें।

आठ मार्च हमारे इतिहास और भविष्य से जोड़ने वाला दिन

इस दिन हम नए सिरे से औरतों की हालत, उनकी स्थिति का जायज़ा लेते हैं। देखते और सोचते हैं कि बराबरी और इन्साफ़ की लड़ाई में हम कहां पहुंचे हैं। इस दिन हम फिर एक बार याद करते हैं उन औरतों को जिन्होंने हर सदी में, हर पीढ़ी में, अपने तरीक़े से औरतों की मर्यादा

आठ मार्च हमारा अपना दिन। दूसरों के लिए उपवास नहीं अपने लिए खुशियां मनाने का दिन अपनी तरह, अपने उसूलों पर जीने की आशाओं का दिन। आओ सोचें कि हमने क्या खोया क्या पाया –

हम क्या थे, क्या हो गए हैं
और क्या होंगे अभी
आओ मिलकर आज विचारें
ये समस्याएं सभी।

के लिए कदम उठाये, औरतों के स्थान, उनकी पहचान, उनके मान के लिए कदम उठाये। आठ मार्च हमें जोड़ता है हमारी, माओं से, नानियों, दादियों से। आज अगर औरतों को कुछ अधिकार हैं, सिर उठाकर खड़े होने की हिम्मत है, आवाज़ उठाने की ताक़त है तो 'वह इसलिए कि हमारे लिए' औरों ने संघर्ष किए, रास्ते बनाएं। यह दिन हमें याद दिलाता है मीरा की, राबिआ की, सैकड़ों औरतों, भिक्खुनिओं की जिन्होंने धर्मों में अपने लिए जगह मांगी और बनाई। यह दिन हमें याद दिलाता है रज़िया सुलताना और झांसी की रानी की जिन्होंने राजनीति में, राज्यों को चलाने में अपने कमाल दिखाए। आठ मार्च हमें याद दिलाता है उन करोड़ों किसान और मज़दूर बहनों की जो हर सदी में, हर समाज की जड़ें रही हैं, जिनकी मेहनत के बल पर सब समाज चलते रहे हैं और चल रहे हैं। यह दिन हमें जोड़ता है उन करोड़ों औरतों से जो घर और गृहस्थियां चलाती रही हैं, जो नई पीढ़ियों को जन्म देती आई हैं, जो नई ज़िन्दगियां बनाती आई हैं। 8 मार्च का दिन हमें याद दिलाता है उन करोड़ों दस्तकार बहनों की जिन्होंने आम इस्तेमाल की चीज़ें बनाई और उनमें रंग भरे, खूबसूरती भरी—चाहे वो झाड़ू हो, या मटके, कपड़े हों या टोकरियां, चटाईयां हों या बर्तन, जेवर हों या चुटीले। कितने रंग, कितनी उमंगे, कितना जीवन, कितना सौन्दर्य रचा है हम औरतों ने।

आठ मार्च हमें अपने इतिहास, अपने पुरखों से ही नहीं जोड़ता, यह हमें हमारे भविष्य से भी जोड़ता है। हम मायें, मासियां, नानियां, दादियां हैं जो आने वाली बच्चियों के लिए रास्ते बना

रही हैं। हमारे काम, हमारे संघर्ष तय करेंगे आने वाली पीढ़ी के रास्ते। हमारी बोई हुई फ़सलें हमारी बच्चियां काटेंगी। हमारे बनाए रास्तों पर वो चलेंगी। अगर हम कुछ कर गुज़रे तो हमारा इतिहास लिखेंगी हमारी बच्चियां। जैसे हम आज सैकड़ों साल पहले की औरतों को याद करते हैं आने वाली पीढ़ियां हमें याद करेंगी।

आठ मार्च का इतिहास

जिन्हें नहीं पता, उनके मन में यह सवाल उठ सकता है कि अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस, यानी हमारा दिन आठ मार्च को ही क्यों मनाया जाता है। इसका भी लगभग डेढ़ सौ साल पुराना इतिहास है। अन्तर्राष्ट्रीय दिन तभी मनाया जा सकता है जब अलग-अलग देशों में सम्पर्क हो, लेना देना हो, आना जाना हो। जब अलग-अलग देशों में औरतों में हलचल हो, औरतों की औरत के रूप में पहचान हो, उनकी औरत होने के नाते समस्याएं और संघर्ष हों।

तो बात 1857 की है। वही 1857 जब हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों के खिलाफ़ जंग छिड़ी थी। उसी वर्ष में अमरीका की मज़दूर औरतें कपड़ा फैक्टरी या मिल मालिकों के शोषण के खिलाफ़ लड़ रही थीं। आठ मार्च 1857 को अमरीका की कपड़ा मिलों की मज़दूर औरतों ने काम बन्द किया और सड़कों पर निकल आईं। उस समय उनसे 16 घंटे काम लिया जाता था। एक दिन में सोलह घंटे, ज़रा सोचिए। सोचना भी मुश्किल है आज। सुबह छः बजे से रात के दस बजे तक। (वैसे आज भी घरों में काम करने वाली "नौकरानियां" सोलह-सोलह घंटे, हफ़्ते में सातों दिन काम करती हैं। अमरीका में हुए संघर्षों का व भारत में हुए मज़दूरों के संघर्षों का फ़ायदा अभी उन तक नहीं पहुंचा है। इन घरेलू "नौकरानियों" की लड़ाईयां अभी होनी हैं) उन अमरीकी औरतों ने मज़दूरी के घंटों को 16 से 10 करने की मांग की। उन मज़दूर बहनों की संगठित लड़ाई की आवाज़ गूंजी होगी और औरतों के संघर्ष ने एक चमक पैदा की होगी।

उस चमक, उस जोश को 1910 में याद किया रूस की समाजवादी नेता क्लारा ज़ेट किन ने। 1910 में एक अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी महिला अधिवेशन में रूस की क्रान्तिकारी नेता क्लारा ज़ेट किन ने यह प्रस्ताव रखा कि आठ मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस घोषित किया जाए। उन्होंने आज से लगभग अस्सी साल पहले दुनिया भर की औरतों को एक जुट होकर युद्ध के खिलाफ आवाज़ उठाने को ललकारा था। उन्होंने औरतों से कहा था कि हम औरतों को अपने बीच युद्धों की दीवारें नहीं खड़ी होनी देनी चाहिए। अगर पुरुष युद्ध करने में लगे हैं, मारने मरने में लगे हैं तो औरतों को शान्ति के लिए लड़ना चाहिए।

1911 से 1915 तक यूरोप के कई देशों में औरतों ने आठ मार्च को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया। रूस में 1913 में पहली बार मॉस्को के एक महिला समूह ने आठ मार्च को मनाया। 1914 में कुछ समाजवादी महिलाओं ने रूस के सैंट पीटर्स बर्ग में आठ मार्च के दिन एक पत्रिका निकालनी शुरू की जिसका नाम था राबोनीत्सा या महिला मज़दूर।

मार्च 1915 में औस्लो, नौर्वे में औरतों ने प्रथम विश्वयुद्ध के ख़िलाफ़ प्रदर्शन किया। 8 मार्च 1917 को रूसी क्रान्ति औरतों की रोटी की मांग के साथ शुरू हुई।

आठ मार्च 1937 को स्पेन की महिलाओं ने वहां

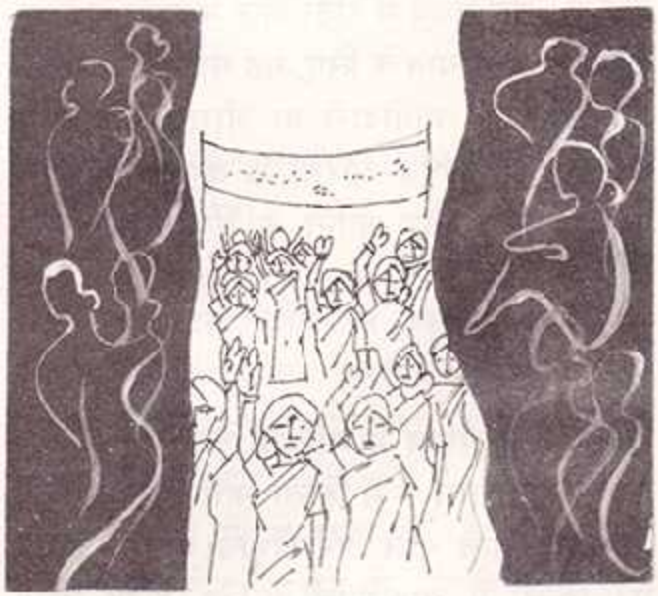

के तानाशाह फ्रैन्को के अत्याचारी शासन के ख़िलाफ़ जुलूस निकाले। आठ मार्च 1943 को इटली की औरतों ने मुसोलिनी की तानाशाही का विरोध किया।

आठ मार्च का है
यह नारा
साल का हर दिन
हो हमारा।

आठ मार्च 1974 में वियतनाम की औरतें इकट्ठी होकर सड़कों पर निकल आईं। आठ मार्च 1979 को 'ईरान' की औरतों ने ख़ोमेनी की औरत विरोधी नीतियों के खिलाफ़ एक बड़ा जुलूस निकाला। कहते हैं उस दिन क़रीब 50,000 औरतें थीं इस जुलूस में।

इस तरह की सैकड़ों और कहानियां लिखी जा सकती हैं जो हमें बताती हैं औरतों के संघर्षों के बारे में। यह संघर्ष थे रोटी और मज़दूरी के लिए, समानता और न्याय के लिए, यह संघर्ष थे राजनीति में बराबर की भागीदारी या औरतों के वोट के अधिकार के लिए। औरतों के बहुत सारे संघर्ष रहे हैं अमन और शान्ति के लिए। हर जगह औरतों ने शान्ति की बात की, अमन का परचम (झंडा) फहराया।

दिल्ली और भारत में महिला दिवस

पिछले बीस साल से मैं हिस्सा लेती रही हूं दिल्ली में मनाए जाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस में। दिल्ली में आठ मार्च के दिन अलग-अलग महिला समूह व संस्थाएं मिलकर अपना दिन मनाती रही हैं। कई हज़ार औरतें आठ मार्च को जुलूस निकालती हैं, गाने गाती हैं और अपनी बात औरों से कहती हैं। यह बात हम नाटकों, गानों, पर्चों, नारों और भाषणों के ज़रिए कहती आई हैं। हर साल हम कुछ खास मुद्दे उठाते आए हैं, ये मुद्दे उस साल के हालात से जुड़े होते हैं। किसी वर्ष हमने बलात्कार का मुद्दा उठाया और औरतों पर होने वाली यौनिक हिंसा की बात की। जिस साल मंहगाई की बात सबके होठों पर थी उस साल हमने मंहगाई के ख़िलाफ़ आवाज उठाई, सरकार की आर्थिक नीतियों का जायज़ा लिया, उस पर अपने विचार रखे और हमारी नज़र में जो नीतियां ग़लत थीं उनका विरोध किया। जब कुछ ख़ास राजनैतिक दलों ने देश में धर्म के नाम पर दंगे फ़साद करवाए, हिंसा फैलाई, हिन्दुओं और सिक्खों, हिन्दुओं-मुसलमानों को लड़वाया, हमने इस सबके ख़िलाफ आवाज़ उठाई है, हमने धार्मिक सद्भाव की बात की। अपनी सबरंगी सभ्यता और संस्कृति की बात की।

सड़कों पर आकर हज़ारों औरतों ने मिलकर कहा "मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना"

बड़े जुलूस की तैयारी के लिए और अलग-अलग बस्तियों में महिला दिवस का संदेश ले जाने के लिए हर साल छोटे-छोटे जुलूस जलसे शहर के कई भागों में किए जाते हैं। महिला समूह अपने-अपने इलाक़ों में अलग-अलग कार्यक्रम करते हैं। इसके अलावा दिल्ली के समूह अपने पर्चे, कार्यक्रम की रूपरेखा, देश के और महिला समूहों को भी भेजते आए हैं। यह हम इस उम्मीद में करते हैं कि अगर देश के कई कोनों से एक ही आवाज़ गूंजेगी तो वह अधिक सशक्त होगी।

आज जहां भी औरतों के समूह हैं, कार्यक्रम हैं, जहां भी औरतें संगठित हैं आठ मार्च का त्यौहार

(क्रमशः पृष्ठ 22 पर)

आठ मार्च : हमारा दिन-हमारा त्यौहार

(पृष्ठ 6 का शेष)

मनाया जाता है, अपनी एकता का इज़हार किया जाता है, अपनी एकता और शक्ति का अहसास किया जाता है। इस दिन साथ मिलकर हम नए सिरे से संकल्प करते हैं समानता, समता, न्याय, अहिंसा, अनेकता के लिए जद्दोजहद करने के लिए; अपने दिलों में आशा के दीप जलाए रखने के लिए। 1998 के महिला दिवस की आप सब को मुबारक। हम जहा भी हों चाहे दो चार के साथ, या सौ हज़ार के साथ अपने दिन मनाएं, एक दूसरे से शक्ति पाएं और ऐसा कुछ गाएं, गुनगुनाएं–

तुम्हारा साथ मिलने से अहसासे कुव्वत आया है
नई दुनिया बनाने का जुनूं फिर हम पे छाया है। □